अध्याय 32

स्वधर्म परित्याग: सोने का बछड़ा

निर्गमन 32-34 यहोवा का मूसा को मिलापवाले तम्बू बनाने के अंतिम निर्देश देने के तुरंत बाद आयोजित किया गया है। यह पाठ लोगों का स्वधर्म त्याग और उनकी पुनर्जागृति से संबंधित है। उन्नीसवें अध्याय में जो वाचा बांधी गई थी और जिसका चौबीसवें अध्याय में सत्यापन किया गया था, वह बत्तीसवें अध्याय में तोड़ा गया और चौंतीसवें अध्याय में उसका नवीनीकरण किया गया। यह अनुभाग इस बात पर जोर देता है कि यद्यपि इस्राएली विश्वासघाती थे और वाचा तोड़ी गई थी, फिर भी परमेश्वर उनके प्रति अनुग्रहकारी और दयालु था।

ज्यों ही मूसा ने पर्वत से लौटने में "विलम्ब किया," हारून ने उनकी आराधना के लिए सोने की बछड़े बनाने में अगुआई की (32:1-6)। परमेश्वर ने मूसा को इस्राएलियों के पाप के बारे में बताया और धमकी दी कि वह उन लोगों को नाश करेगा (32:7-10)। जब मूसा ने इस्राएलियों के लिए मध्यस्थता की तो परमेश्वर ने नर्मी दिखाई (32:11-14)।

जब मूसा पर्वत से उतरा और उसने इस्राएलियों की मूर्तिपूजा देखी, तो उसने व्यवस्था की तख्तियाँ तोड़ डाली (32:15-19)। तब उसने सोने की मूर्ति को चूर-चूर कर डाला और उसे पानी में मिलाया और उसने लोगों को उसे पीने के लिए कहा (32:20)। हारून से यह जानने के पश्चात कि मूर्ति कैसे बनाई गई थी (32:21-24), मूसा ने विद्रोही इस्राएलियों को मार डालने के लिए लेवियों की सूची बनाई (32:25-29)। मूसा ने लोगों के पापों को अपने ऊपर लेने की ठानी (32:30-32), लेकिन परमेश्वर ने पाप का बोझ पाप करने वालों के सिर पर डाला (32:33)। इस्राएलियों के पाप के कारण परमेश्वर ने उन पर एक विपत्ति डाली (32:34, 35)।

इस्राएलियों का पाप: बछड़े की मूर्ति की उपासना करना (32:1-6)

[1]जब लोगों ने देखा कि मूसा को पर्वत से उतरने में विलम्ब हो रहा है, तब वे हारून के पास इकट्ठे होकर कहने लगे, "अब हमारे लिये देवता बना, जो हमारे आगे आगे चले; क्योंकि उस पुरुष मूसा को जो हमें मिस्र देश से निकाल ले आया है, हम नहीं जानते कि क्या हुआ?" [2]हारून ने उनसे कहा, "तुम्हारी स्त्रियों और

बेटे बेटियों के कानों में सोने की जो बालियाँ हैं उन्हें उतारो, और मेरे पास ले आओ।" 3तब सब लोगों ने उनके कानों से सोने की बालियों को उतारा, और हारून के पास ले आए। 4हारून ने उन्हें उनके हाथ से लिया, और एक बछड़ा ढालकर बनाया, और टाँकी से गढ़ा। तब लोग कहने लगे, "हे इस्राएल, तेरा ईश्वर जो तुझे मिस्र देश से छुड़ा लाया है, वह यही है।" 5यह देख के हारून ने उसके आगे एक वेदी बनवाई; और यह प्रचार किया, "कल यहोवा के लिये पर्व होगा।" 6और दूसरे दिन लोगों ने भोर को उठकर होमबलि चढ़ाए, और मेलबलि ले आए; फिर बैठकर खाया पिया, और उठकर खेलने लगे।

आयत 1. मूसा का **पर्वत** पर चालीस दिन रहने का परिणाम इस्राएलियों का स्वधर्म त्याग का कारण बना (24:18)। जब कि कुछ विद्वानों का मत है कि मूसा का चालीस दिन की अवधि को सांकेतिक रूप से समझना चाहिए, जैसे "अनिश्चितकालीन लम्बी अवधि का पूर्णांक,"[1] लेकिन इस संख्या को शाब्दिक रूप से समझना चाहिए। व्यवस्थाविवरण 9:11 इसी समयावधि के बारे में बताता है "चालीस दिन और रात।"

जबकि इस्राएलियों के पाप के लिए कोई बहाना नहीं है, लेकिन इसको समझा जा सकता है। लोगों के दृष्टिकोण से मिस्र से बचकर निकलना, लाल समुद्र से छुटकारा पाना, और यदि वे मरुस्थल में जीवित हैं तो वह एक ही व्यक्ति मूसा के कारण है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्होंने इसका श्रेय यहोवा परमेश्वर को भी उसकी आशिषों के लिए दिया। फिर भी, यदि मूसा ही लोप हो जाता तो यहोवा की आशीष उनको कैसे प्राप्त होता? जैसे उन्होंने देखा भी था कि उसकी आशीष केवल मूसा के द्वारा ही उनको मिलती थी।

उन्होंने तर्क संगत विचार किया कि यदि मूसा विलुप्त हो गया था,तो उन्हें एक दूसरे **ईश्वर** (אֱלֹהִים, *एलोहीम)* की आवश्यकता थी जो उनकी अगुआई जंगल में कर सके। यह बहुवचन शब्द कभी-कभी इस्राएल का "परमेश्वर," दूसरे "ईश्वर," या कई ढेर सारे "ईश्वरों" के लिए प्रयोग किया गया है। इस संदर्भ में NASB, दूसरे अनुवादों (NAB; NJB) के साथ इसका अनुवाद एकवचन "ईश्वर" के रूप में करता है, जबकि अन्य अनुवादों (KJV; NKJV; NRSV; ESV; REB; NIV) में इसका अनुवाद बहुवचन "ईश्वरों" किया गया है। इसका कारण यह है कि *एलोहीम* के बाद बहुवचन क्रिया प्रयोग किया गया है जिसका यह अर्थ निकाला जा सकता है कि वे किसी अन्य देवता की खोज कर रहे थे, और यहोवा की खोज नहीं कर रहे थे; लेकिन जब यहोवा के लिए *एलोहीम* प्रयोग किया जाता था तो उसके साथ सामान्यता एकवचन क्रिया प्रयोग किया जाता है।[2] उन्हें यह समझ लेना चाहिए था कि उनके हाथों का बना ईश्वर उनकी सहायता नहीं कर सकता था। फिर भी, प्राचीन मध्य पूर्व के लोगों के समान, अपने मिथक विचारों को समझने में वे नाकाम रहे।

आयतें 2, 3. इस स्वधर्म त्याग में **हारून** का हाथ होना बड़ा ही पेचीदा मामला है। इस्राएली लोग यहोवा और उसके साथ किए वादे इतनी जल्दी कैसे भूल सकते

हैं (19:8; 24:3, 7)? इससे भी पेचीदा बात तो यह है कि मूसा का भाई लोगों की विनती के अनुसार उनके लिए मूर्ति कैसे बना सकता है? हारून के इस व्यवहार का कैसे विश्लेषण किया जाए?

1. क्या हारून का दृष्टिकोण लोगों के दृष्टिकोण से भिन्न था? वे चाहते थे कि वह उनके लिए एक "ईश्वर" *(एलोहीम)* बनाए, जो उससे भिन्न हो जिसे मूसा ने उन्हें प्रस्तुत किया था। क्या हारून ने बछड़ा बनाकर यहोवा के लिए पर्व की घोषणा की (32:5)? हो सकता है कि ऐसा न हो, उसने बछड़ा बनाकर परमेश्वर पर भरोसा करना नहीं छोड़ा।

2. क्या हारून जरूरत से अधिक निर्बल हो चुका था? यह सोचकर कि वह दुष्टता से ग्रसित लोगों के सम्मुख झुका होगा कि अभी तो वह परिस्थिति के अनुसार ऐसा ही करेगा लेकिन भविष्य में वह बेहतर करेगा।

हारून ने लोगों से कहा कि वे अपने **पत्नियों, पुत्रों और पुत्रियों** के **सोने के गहने**, जो उन्होंने **कानों** में पहने थे, जमा करें - इस आदेश का उन्होंने उत्सुकता से पालन किया। सामी लोगों के बीच स्त्री और पुरुषों का गहने पहनना कोई असामान्य बात नहीं था (न्यायियों 8:24-26)। गहनों का श्रृंगार के अलावा कभी-कभी आत्मिक उद्देश्य भी होता था। आर. के. हैरीसन का मानना है कि कर्णफूल प्राचीनकाल के लोग "जादुई ताबीज के रूप में पहनते थे ताकि वे कान के द्वार को बन्द रखे जिससे दुष्टात्मा उनके भीतर प्रवेश न कर सके और उनको व्याधिग्रस्त न करे।"[3] कर्णफूल और मूर्तिपूजा के बीच संबंध की व्याख्या याकूब के परिवार से की गई है कि किस प्रकार उन्होंने अपने गृह देवताओं से छुटकारा प्राप्त किया था (उत्पत्ति 35:2, 4)।

हो सकता है कि इस्राएलियों के कुछ आभूषण जिसका प्रयोग बछड़ा बनाने में किया गया होगा वह उन्हें मिस्रियों ने मिस्र छोड़ते समय दिए होंगे (11:2; 12:35, 36)। बलवा करने के पश्चात, इस्राएलियों ने विलाप और पश्चाताप के प्रतीक अपने आभूषण उतार दिए थे (33:5, 6)। कालांतर में, मिलापवाले तम्बू के निर्माण के लिए, उसकी साज सज्जा के लिए, और याजकों के वस्त्रों के लिए, उन्होंने अपने आभूषण उदारतापूर्वक दे दिए थे (35:21, 22)।

आयत 4. इस अवसर पर, हारून ने इस्राएलियों के कर्णफूल लिये और उन्हें ढालकर **एक सोने का बछड़ा** बनाया। कुछ टीकाकारों का मानना है मूर्ति लकड़ी की बनाई गई थी जिसको सोने से मढ़ा गया था।[4] यह तथ्य कि मूर्ति आग में जलाई गई थी (32:20) इसकी संभावना व्यक्त करती है। फिर भी, यह तथ्य कि दो बार (32:4, 8) मूर्ति की व्याख्या ढालकर (מַסֵּכָה, *मासेकाह)* बनाया गया था, उल्लेख किया गया है, का तात्पर्य यह हुआ कि मूर्ति को गलाकर ही बनाया गया होगा और बाद में **खोदने वाले हथियार** से उसको तराशा गया होगा। जिस प्रकार जेम्स बर्टन कॉफमैन ने इंगित किया है कि उस बड़ी भीड़ के पास मूर्ति बनाने के लिए पर्याप्त सोना था।[5]

आर. ऐलेन कोल के अनुसार इब्रानी शब्द עֵגֶל *('ऐगेल)* का उचित अनुवाद बछड़ा नहीं है; बल्कि इसका "तात्पर्य एक जवान बैल है।"[6] हारून और इस्राएलियों

को बछड़ा के रूप में ईश्वर या ईश्वर का प्रतिनिधि बनाने का विचार कहाँ से मिला? क्योंकि इस्राएली लोग 430 वर्ष तक मिस्र प्रवास पर थे, तो निस्संदेह वे वहाँ मिस्रियों के संस्कृति से प्रभावित हुए होंगे जो अपीस के पवित्र बैल की उपासना किया करते थे।[7] इससे बढ़कर नहूम एम. सारना ने लिखा है,

> ईश्वर को बैल के रूप में प्रस्तुत करना सम्पूर्ण मध्य पूर्व में सामान्य प्रचलित प्रथा थी। यह जानवर अपने प्रभुता, बल, सक्रिय ऊर्जा, और उर्वरता का प्रतीक था और या तो इसको वे ईश्वर के रूप में मानते थे या फिर वह उनके आराधना का विषय हो जाता था या फिर इसमें व्याप्त दैवीय गुणों के कारण इसको वे दैवीय उपस्थिति का प्रतिनिधि मानते थे।[8]

यद्यपि हारून ने लोगों के कर्णफूल गलाकर मूर्ति बनाया था, लेकिन परमेश्वर ने लोगों को इस मूर्ति को बनाने के लिए जिम्मेदार ठहराया (32:8)।

जब हारून ने मूर्ति बनाया, "**तब वे कहने लगे, कि हे इस्राएल तेरा परमेश्वर जो तुझे मिस्र देश से छुड़ा लाया है वह यही है।**" आयत 1 के समान, NASB में *एलोहीम* का अनुवाद एकवचन "ईश्वर" किया गया है, जबकि दूसरे अनुवादों में यह बहुवचन में अनुवाद किया गया है। "वे" का तात्पर्य लोग या उनके अगुवे हो सकते हैं जिन्होंने हारून से मूर्ति बनाने के लिए कहा होगा (32:1) और जिन्होंने मूर्ति बनाने के लिए सोने के कर्णफूल उपलब्ध कराया था (32:3)। यदि ऐसा है, तो ये लोग इस बात की घोषणा कर रहे थे कि मूसा ने जिस प्रभु को प्रस्तुत किया था उसके अलावा मूर्ति भी कोई ईश्वर है। दूसरी ओर, यदि, "वे" हारून और उसके पुत्रों को संबोधित करता है तब (चाहे लोगों का बछड़े की उपासना करने का उद्देश्य कुछ भी क्यों न हो) वे यह कह रहे थे, "यह यहोवा परमेश्वर है, जो तुम्हें मिस्र से निकाल लाया है।" इस अनुवाद से ऐसा समझ आता है कि अगले दिन हारून ने "यहोवा के लिए एक पर्व" की घोषणा की (32:5)।

सारना ने दावा किया कि लोग एक दूसरे ईश्वर के बारे में बात नहीं कर रहे थे बल्कि वे इस्राएल के परमेश्वर, यहोवा के प्रतिनिधि के बारे में बात कर रहे थे। उन्होंने कहा, "यह निश्चित है कि एक दूसरे ईश्वर की मांग एक प्रतीकात्मक दैवीय उपस्थिति की मांग थी।"[9] हो सकता है कि हारून लोगों की मांग की पूर्ति करने का प्रयास कर रहा था। चूँकि मूसा उनके बीच नहीं था तो उनके सम्मुख ऐसा कोई नहीं था जो यहोवा परमेश्वर का प्रतिनिधित्व कर सके; इसलिए उसने यहोवा का प्रतिनिधि बनाया। दूसरे ईश्वर की उपासना कर उनको प्रथम आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए था।

किसी भी परिस्थिति में, वे परमेश्वर का भौतिक प्रतिनिधि बनाकर और उसकी उपासना कर, दूसरी आज्ञा का उल्लंघन कर रहे थे (32:8)। यह अवतरण परमेश्वर का भौतिक मूर्ति या वस्तु बनाने के खतरे का उल्लेख करने का प्रयास कर रहा है। जबकि यह देखा जा सकता है कि मूर्ति का उद्देश्य आराधकों का ध्यान परमेश्वर की ओर खींचने का प्रयास था ताकि उसकी आराधना अधिक अर्थपूर्ण तरीके से किया जा सके, इस प्रकार के मूर्ति बनाने का अपरिहार्य परिणाम यह है

कि मूर्ति, अंततः और अपरिहार्य रूप से आराधना की वस्तु बन जाता और इस प्रकार वह अपने आप में ईश्वर का रूप धारण करता। इस प्रकार दूसरा आज्ञा तोड़ने से पहला आज्ञा स्वतः ही टूट जाता है।

कालांतर में, मूसा ने परमेश्वर के सम्मुख अंगीकार किया कि लोगों ने अपने लिए "एक सोने का ईश्वर बना लिया था" (32:31)। नहेम्याह ने लिखा कि उन्होंने अपने लिए "बछड़ा ढालकर कहा, 'तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है'" (नहेम्य. 9:18)। भजन संहिता 106:19, 20 कहता है, "उन्होंने होरेब में बछड़ा बनाया, और ढली हुई मूर्ति को दण्डवत् की। यों उन्होंने अपनी महिमा अर्थात् परमेश्वर को घास खानेवाले बैल की प्रतिमा से बदल डाला।" नये नियम में इस घटना के बारे में स्तिफनास ने कहा, "उन दिनों में उन्होंने एक बछड़ा बनाकर उसकी मूरत के आगे बलि चढ़ाई, और अपने हाथों के कामों में मगन होने लगे" (प्रेरितों. 7:41)। पौलुस ने घोषणा किया कि वे मूर्तिपूजा के दोषी ठहरे (1 कुरि. 10:7)।

आयत 5. वाक्यांश **यह देख के हारून ने** संकेत करता है कि हारून उस घोषणा, "तेरा ईश्वर" (32:4), का भाग नहीं था। परन्तु यह देखकर कि इस्राएलियों ने बछड़े को उन्हें मिस्र से निकाल कर लाने वाले परमेश्वर के साथ जोड़ दिया था, हारून ने निर्णय लिया होगा कि परिस्थिति का उचित उपयोग करते हुए **यहोवा के लिये पर्व** की घोषणा कर दे। हारून की मनसा रही होगी कि वह प्रतिमा यहोवा को दर्शाए - संभवतः प्रतीकात्मक रूप में ऐसे स्थान या सिंहासन का कार्य करे जहाँ से वह शासन करे। डब्ल्यू. एच. गिस्पेन ने कहा, "कुछ का मानना है कि बछड़ा, देवता का प्रतीक होने के स्थान पर, मात्र ऐसा प्रत्यक्ष मंच था जिस पर अदृश्य ईश्वर खड़ा था।"[10]

आयत 6. इसलिए, **दूसरे दिन**, लोगों ने यहोवा के लिए पर्व मनाया। दिन का आरंभ धार्मिक अनुष्ठानों से हुआ। उन्होंने **होमबलि चढ़ाए, और मेलबलि ले आए**। इस प्रकार के बलिदान, मूसा द्वारा दी गई व्यवस्था से पूर्व के हैं (10:25; 18:12)। परमेश्वर को बलिदान अर्पित करना कैन और हाबिल के समय से होता आ रहा था (उत्पत्ति 4:3-5)। इसके बीच के वर्षों में, कुछ बलिदान "होमबलि" कहलाए, क्योंकि वह बलिदान वेदी पर पूर्णतः जल जाता था। अन्य बलिदानों को "मेल बलि" कहा गया; क्योंकि इनका कुछ भाग वेदी पर अर्पित किया जाता था और शेष भाग उन्हें अर्पित करने वाले खा लेते थे।

फिर, लेख कहता है कि **लोगों ने बैठकर खाया पिया, और उठकर खेलने लगे**। इस तथ्य पर कि लोगों ने खाया और पीया अचरज नहीं करना चाहिए, क्योंकि इस्राएलियों ने "मेल बलि" चढ़ाई थीं। यित्रो ने भी, इस्राएल के पुरनियों के साथ ऐसे बलिदान अर्पित करने के पश्चात भोजन किया था (18:12)। परन्तु यह तथ्य कि वे "उठकर खेलने लगे" सुझाव देता है कि वे "भद्दे और अत्यधिक मद्यपान की रंगरलियों" में संलग्न थे, जो कि "अन्य-जाति मूर्तिपूजकों के प्रजनन उत्सवों का विशिष्ट लक्षण था।"[11] शब्द "खेल" (צָחַק, *त्साक)* का अर्थ "हंसी," "मजाक," "खेल करना," या "ठट्ठा करना" हो सकता है। इसके अतिरिक्त यह यौन क्रिया की ओर भी

संकेत कर सकता है (उत्पत्ति 26:8; 39:14, 17)। संभवतः वह धार्मिक अनुष्ठान नाचने गाने के साथ एक प्रकार से यौन क्रिया का नंगा नाच हो गया (32:17-19)। नए नियम में, प्रेरित पौलुस ने इस घटना का उदाहरण देकर कुरिन्थ के मसीहियों को सचेत किया कि वे अन्य-जाति मूर्तिपूजकों की पूजा और नाच-गाने में सम्मिलित न हों (1 कुरि. 10:7)।

परमेश्वर का प्रत्युत्तर: इस्राएल को नाश कर देने की धमकी (32:7-10)

[7]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "नीचे उतर जा, क्योंकि तेरी प्रजा के लोग, जिन्हें तू मिस्र देश से निकाल ले आया है, वे बिगड़ गए हैं; [8]और जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा मैं ने उनको दी थी उसको झटपट छोड़कर उन्होंने एक बछड़ा ढालकर बना लिया, फिर उसको दण्डवत् किया, और उसके लिये बलिदान भी चढ़ाया, और यह कहा है, 'हे इस्राएलियो, तुम्हारा ईश्वर जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा ले आया है वह यही है'।" [9]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं ने इन लोगों को देखा, और सुन, वे हठीले हैं। [10]अब मुझे मत रोक, मेरा कोप उन पर भड़क उठा है जिससे मैं उन्हें भस्म करूँ; परन्तु तुझसे एक बड़ी जाति उपजाऊँगा।"

आयत 7. इस्राएलियों ने यह मान लिया था कि मूसा और उसके परमेश्वर ने उन्हें त्याग दिया है। किसी ईश्वरीय प्रतिनिधि के अभाव में, उन्होंने स्वयं अपने देवता को गढ़ लिया। परन्तु न मूसा और न ही यहोवा ने उन्हें त्यागा था। वरन उन लोगों ने ही मूसा और यहोवा को त्याग दिया था। पर्वत पर, **यहोवा ने मूसा को नीचे उतर जाने** और परिस्थिति से निपटने के लिए कहा। इस्राएल के प्रति परमेश्वर का रोष इस बात से प्रकट है कि उसने उन्हें अपने नहीं वरन मूसा की प्रजा के **लोग** या "इन लोगों" (32:9) कहा। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के साथ बांधी गई वाचा को तोड़ा था, इसलिए, वास्तविकता में, वे उसकी प्रजा नहीं कहला सकते थे।[12] परमेश्वर ने यह भी कहा कि इस्राएली, जो कि "पवित्र जाति" (19:6) होने के लिए बुलाए गए थे, **वे बिगड़ गए हैं**।

आयात 8. यहोवा ने अभियोग लगाया कि लोगों ने **जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा मैं ने उनको दी थी उसको झटपट छोड़कर** अन्य मार्ग अपना लिया है। उन्होंने एक **बछड़ा ढालकर** बना लिया, फिर **उसको दण्डवत किया**, और **उसके लिये बलिदान भी चढ़ाया** मानो उस ने ही उन्हें **मिस्र** से छुड़ाया था।

यदि लोगों की अधीरता को कुछ सीमा तक समझा जा सकता है तो फिर परमेश्वर का कोप कितना अधिक होगा! ये वही लोग थे जिन्हें परमेश्वर ने अपने अनुग्रह और सामर्थ्य द्वारा मिस्र से छुड़ाया था। उन्होंने वे आश्चर्यकर्म देखे थे जो उसने मिस्र और जंगल में किए थे। उन्होंने उसकी अभिभूत कर देने वाली उपस्थिति का अनुभव किया था। उन्होंने प्रतिज्ञा भी की थी कि वे वह सब कुछ करेंगे जो यहोवा कहेगा (19:8)। परमेश्वर की आज्ञाओं को सुनने के बाद भी, जिसमें पहली

और दूसरी आज्ञाएँ सम्मिलित थीं (20:3-6), उन्होंने फिर से परमेश्वर की हर बात मानने की सहमति दी थी (24:3, 7)। मूसा को पर्वत पर चढ़े केवल चालीस दिन ही हुए थे, और लोगों ने सोने के बछड़े की उपासना करना आरंभ कर दिया था। इसलिए कोई अचरज की बात नहीं कि परमेश्वर उन्हें नाश करना चाहता था!

आयात 9. यहोवा ने इस्राएलियों को **हठीले** कहा। शब्द "हठीले" या "ढीठ" (NEB; TEV) को קְשֵׁה־עֹרֶף *(केशह 'ओरेप)* के अनुवाद के लिए प्रयोग किया गया है, जो एक मुहावरा है जिसका वास्तविक अर्थ "हठीला" है (KJV; NKJV; ASV; RSV; NRSV; NIV)। बहुत संभव है कि यह मुहावरा खेती-किसानी से संबंधित हठीले पशुओं से निकला, जो अपनी गर्दन अकड़ा लेते थे जिससे उन पर जुआ न बाँधा जा सके। जेम्स के. हौफ्मेइयर ने स्पष्ट किया,

> इस्राएलियों के लिए, वाचा के नियमों का पालन करना जुए में बांधने के समान था, जबकि अनाज्ञाकारिता जुए को तोड़ देना था (यिर्म. 2:20; 5:5); इसलिए परमेश्वर के जुए को पहनना तो आदर्श था, परन्तु जुए को तोड़ना स्वधर्मत्याग और गर्दन को कड़ा करना उसे पहनने से मना करना था।[13]

निर्गमन 32:9 पुराने नियम में "हठीले" का प्रथम प्रयोग है। यह वाक्यांश बारंबार प्रयोग होता है, इस्राएल के परमेश्वर की वाचा की अनाज्ञाकारिता और उसके भविष्यद्वक्ताओं की चेतावनियों को मानने से मना करने के लिए।

आयत 10. इस बिंदु पर आकर, परमेश्वर ने उन्हें **भस्म** कर देने और मूसा में होकर **एक बड़ी जाति** स्थापित करने की धमकी दी। अवश्य ही, परमेश्वर का कोप, न्यायसंगत था। परमेश्वर ने जो वाचा लोगों के साथ बांधी थी, उसके अनुसार, जब तक लोग परमेश्वर के आज्ञाकारी रहते, वे उसकी प्रजा होते। जब तक वे उसकी इच्छानुसार करते, वह उन्हें आशीषित करता। क्योंकि इस घटना में उन्होंने उसकी इच्छानुसार नहीं किया था, इसलिए कोपित होने में परमेश्वर सही था और यदि वह इस्राएल के साथ अपनी वाचा को त्याग देता तथा उस जाति का नाश कर देता तो भी वह सही होता।

यद्यपि परमेश्वर इस्राएल के नाश में न्यायसंगत होता, परन्तु यदि वह मानवजाति को बचाने के लिए एक बड़ी जाति बनाने की अपनी योजना को त्याग देता तो वह परमेश्वर न होता। उसने मूसा के सामने एक वैकल्पिक योजना रखी। उसका "दूसरी योजना" थी कि इस्राएलियों के पुरखों से की गई अपनी प्रतिज्ञाओं को वह मूसा में होकर पूरा करेगा।

मूसा की मध्यस्थता (32:11-13)

[11]तब मूसा अपने परमेश्वर यहोवा को यह कहके मनाने लगा, "हे यहोवा, तेरा कोप अपनी प्रजा पर क्यों भड़का है जिसे तू बड़े सामर्थ्य और बलवन्त हाथ के द्वारा मिस्र देश से निकाल लाया है? [12]मिस्री लोग यह क्यों कहने पाएँ, 'वह उनको बुरे अभिप्राय से अर्थात् पहाड़ों में घात करके धरती पर से मिटा डालने की

मनसा से निकाल ले गया?' तू अपने भड़के हुए कोप को शांत कर, और अपनी प्रजा को ऐसी हानि पहुँचाने से फिर जा। 13अपने दास अब्राहम, इसहाक, और याकूब को स्मरण कर जिनसे तू ने अपनी ही शपथ खाकर यह कहा था, 'मैं तुम्हारे वंश को आकाश के तारों के तुल्य बहुत करूँगा, और यह सारा देश जिसकी मैं ने चर्चा की है तुम्हारे वंश को दूँगा कि वे उसके अधिकारी सदैव बने रहें'।"

आयत 11. मूसा ने इस्राएलियों का पक्ष लिया, जैसे कि एक अधिवक्ता न्यायालय में अपने मुवक्किल के बचाव के लिए आता है। इस अवसर पर उसकी प्रेरक बोली उसकी पूर्व आपत्ति कि वह कभी "बोलने में निपुण नहीं" था और वह "मुंह और जीभ का भद्दा" है (4:10) पर संदेह लाती है। वाक्पटुता के साथ मूसा ने तीन तर्क प्रस्तुत किए कि **परमेश्वर** अपनी घोषित योजना को कार्यान्वित न करे।

पहला तर्क था कि परमेश्वर *स्मरण करे कि उसने क्या किया था*। मूसा ने, परमेश्वर के लोगों के विषय जिन्हें **वह बड़े सामर्थ्य और बलवन्त हाथ के द्वारा मिस्र देश से निकाल लाया है**, का उल्लेख करके इस विचार की ओर संकेत किया। प्रत्यक्षतः वह चाहता था कि परमेश्वर स्मरण करे कि उसने इस्राएल के लिए क्या कुछ किया था जिससे कि वह उनका नाश करने के प्रति कम गंभीर हो, जिन्हें उसने इतने अनुग्रह के साथ छुड़ाया था।

आयात 12. दूसरा तर्क था कि परमेश्वर इस बात का ध्यान करे कि *अन्य लोग क्या कहेंगे*। मूसा ने संकेत किया कि **मिस्री लोग** यह जानते थे कि इस्राएल के परमेश्वर ने उन्हें छुड़ाया है; उन्होंने उसकी सामर्थ्य को देखा था और वे उसकी स्वीकृति भी देंगे। अब यदि परमेश्वर जंगल में इस्राएलियों का नाश कर देगा, तो वे उसकी भली योजनाओं पर संदेह करेंगे। हो सकता है कि वे कहें कि "वह सामर्थी परन्तु *दुष्ट* ईश्वर है।" मूसा के कहने का तात्पर्य था, "अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान कीजिए।"

आयत 13. परमेश्वर के लिए तीसरा तर्क था कि वह *अपनी प्रतिज्ञाओं को न भूले*। परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञाएँ **अब्राहम, इसहाक, और याकूब** से की थीं, और उनमें उनके **वंश** को बढ़ाने और एक **देश** देने की बात थी। मूसा यह कहता प्रतीत होता है कि "यदि तू सारे लोगों को नाश कर देगा, तो ये विशिष्ट प्रतिज्ञाएँ पूरी नहीं होने पाएंगी।"

परमेश्वर का पुनः विचार करना (32:14)

14तब यहोवा अपनी प्रजा की हानि करने से जो उसने कहा था पछताया।

आयत 14. लेख के अनुसार, मूसा के तर्कों ने परमेश्वर को सहमत कर लिया; वह **पछताया**, और पुनः "पहली योजना" को लौट गया। मूसा तब वह करने को तैयार था जो परमेश्वर ने उसे करने को कहा था: "नीचे उतर जा" (32:7)।

आयत का अर्थ तो स्पष्ट है, किन्तु इससे यह महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है: परमेश्वर पछता कैसे सकता है? अन्ततः, जैसे बाइबल सिखाती है, परमेश्वर अपरिवर्तनीय

है। उसने मलाकी 3:6 में कहा, "क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं; इसी कारण, हे याकूब की सन्तान तुम नाश नहीं हुए" (देखें गिनती 23:19; याकूब 1:17)। इसलिए यह कहना कैसे संभव है कि परमेश्वर "पछताया" जैसे कि 32:14 में दिया गया है?

शब्द נָחַם *(नौचैम)* जिसे "अपना मन बदला" (NASB; NRSV) लिखा गया है, का अनुवाद "पछताया" (NKJV; NIV; NAB; NJB; ESV) भी होता है। KJV में "पश्चाताप करना" आया है, जिससे पाठकों के अन्दर असमंजस और बढ़ गया है। कोई पूछ सकता है कि "एक पूर्णतः पवित्र, निष्पाप परमेश्वर कैसे पश्चाताप कर सकता है?" वॉल्टर सी. कैसर, जूनियर, ने यह लाभदायक स्पष्टीकरण प्रदान किया है:

> परमेश्वर का पश्चाताप या "पछताना" एक अवतारवाद (परमेश्वर का मानवीय स्वरूप के अनुसार वर्णन) है जो हमें यह दिखाता है कि वह मनुष्यों के प्रति अपने कार्य और भावनाओं को बदल सकता है और बदलता है जब उसके पास ऐसा करने के पर्याप्त कारण होते हैं, और इस प्रकार वह अपनी मूलभूत निष्ठा या चरित्र में कोई बदलाव नहीं लाता है (तुलना करें भजन 99:6; 106:45; यिर्म. 18:8; अमोस 7:3, 6; योना 3:10; याकूब 5:16)। परमेश्वर के पश्चाताप करने के तीन कारण हैं: (1) मध्यस्थता (तुलना करें अमोस 7:1-6); (2) लोगों का पश्चाताप (यिर्म. 18:3-11; योना 3:9-10); और (3) करुणा (व्यव. 32:36; न्यायियों 2:18; 2 शमूएल 24:16)।[15]

जबकि इब्रानी पारिभाषिक शब्द *नौचैम* को बहुधा परमेश्वर द्वारा अपना मन बदलने के लिए प्रयोग किया जाता है, मनुष्य के लिए पाप से पश्चाताप करने के लिए अधिक सामान्य शब्द है שׁוּב *(शुब)*।

"यहोवा ने अपना मन बदल लिया" का अर्थ है कि उसने इस्राएल के प्रति अपना पूर्वघोषित रवैया या कार्य-योजना को परिस्थितियों में परिवर्तन के अनुसार बदल लिया। इस स्थिति में, परमेश्वर में परिवर्तन लाने वाली नई परिस्थिति थी मूसा की मध्यस्थता। लेकिन, परमेश्वर के किसी के प्रति अपने व्यवहार में परिवर्तन से इसमें कोई घटी नहीं होती है कि वह अपरिवर्तनीय है - अपने चरित्र में, मानवजाति के लिए अपनी मूलभूत योजना में, और अपने उद्देश्य में।

इस्राएल पर दण्ड (32:15-35)

दूषित पानी को पीना (32:15-24)

15तब मूसा मुड़कर साक्षी की दोनों तख़्तियों को हाथ में लिये हुए पहाड़ से उतर गया। उन तख़्तियों के इधर और उधर दोनों ओर लिखा हुआ था, 16और वे तख़्तियाँ परमेश्वर की बनाई हुई थीं, और उन पर जो खोदकर लिखा हुआ था वह परमेश्वर का लिखा हुआ था। 17जब यहोशू को लोगों के कोलाहल का शब्द सुनाई

पड़ा, तब उसने मूसा से कहा, "छावनी से लड़ाई का सा शब्द सुनाई देता है।"
18उसने कहा, "यह जो शब्द है वह न तो जीतनेवालों का है, और न हारनेवालों का
है; मुझे तो गाने का शब्द सुनाई पड़ता है।" 19छावनी के पास आते ही मूसा को वह
बछड़ा और नाचना दिखाई पड़ा, तब मूसा का कोप भड़क उठा, और उसने तख़्तियों
को अपने हाथों से पर्वत के नीचे पटककर तोड़ डाला। 20तब उसने उनके बनाए हुए
बछड़े को लेकर आग में डाल के फूँक दिया। और पीसकर चूर चूरकर डाला, और
जल के ऊपर फेंक दिया, और इस्राएलियों को उसे पिलवा दिया। 21तब मूसा हारून
से कहने लगा, "इन लोगों ने तेरे साथ क्या किया कि तू ने उनको इतने बड़े पाप में
फँसाया?" 22हारून ने उत्तर दिया, "मेरे प्रभु का कोप न भड़के; तू तो इन लोगों को
जानता ही है कि ये बुराई में मन लगाए रहते हैं। 23और उन्होंने मुझसे कहा, 'हमारे
लिये देवता बनवा जो हमारे आगे आगे चले; क्योंकि उस पुरुष मूसा को, जो हमें
मिस्र देश से छुड़ा लाया है, हम नहीं जानते कि क्या हुआ?' 24तब मैं ने उनसे कहा,
'जिस जिसके पास सोने के गहने हों, वे उनको उतार लाएँ;' और जब उन्होंने मुझ
को वह दिया, मैं ने उन्हें आग में डाल दिया, तब यह बछड़ा निकल पड़ा।"

आयत 15. वे **दोनों तख़्तियाँ साक्षी** की तख़्तियाँ थीं (देखें 31:18)। नियमों को "साक्षी" कहने का विचार संकेत करता है कि नियम इस्राएल के लिए परमेश्वर की इच्छा को प्रमाणित करते थे, और यदि नियम तोड़े जाते तो यह परमेश्वर की इच्छा का तिरस्कार करने वालों के विरुद्ध साक्षी होता। सामान्यतः यह माना जाता है कि तख्तियों पर केवल दस आज्ञाएँ ही लिखी हुई थीं। आज के चित्रों में दिखाए गए के विपरीत, तख्तियों पर **दोनों ओर लिखा हुआ था**।

आयत 16. क्योंकि **वे तख़्तियाँ परमेश्वर की बनाई हुई थीं, और उन पर जो खोदकर लिखा हुआ था वह परमेश्वर का लिखा हुआ था**, इसलिए लोग उसके नियमों को बिना दण्ड भोगे तोड़ नहीं सकते थे। जैसा कि जॉन आई. डरहम ने कहा, इस वाक्य का अभिप्राय है, "परमेश्वर का आज्ञाओं का स्त्रोत और इस कारण उनके पीछे का प्राधिकारी होने की पुष्टि करना।"[16] लेख तख्तियों के बनाए जाने में परमेश्वर के योगदान पर बल देता है, जो कि उसकी "उंगली" से लिखी गई थीं (31:18)।

आयत 17. यहोशू पर्वत पर कुछ दूर तक गया था और मूसा के लौट कर आने की वहीं प्रतीक्षा कर रहा था। जब मूसा पर्वत के ऊपर से उतरा, तो **छावनी** से आने वाले कोलाहल को उसने **लड़ाई का सा शब्द** समझा - जो ऐसा शब्द था जिसके लिए सर्वोच्च सेनापति को वापस लौट कर आना था।

आयत 18. मूसा, क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर ने उसे क्या बताया है, उस शब्द को अधिक भली-भांति, गाने का **शब्द**, समझ सका। इस खण्ड को NASB काव्य रूप में छापती है, जैसा कि 15:1-18 के काव्यात्मक खण्ड को।

आयत 19. वृतांत में इससे पूर्व, परमेश्वर के क्रोध पर बल दिया गया था (32:10)। मूसा ने परमेश्वर से आग्रह किया कि अपने क्रोध में लोगों को नाश न करे। मूसा की मध्यस्थता के कारण, पाठक को यह आभास हो सकता है कि मध्यस्थ

मूसा इतना दयालु था कि वह लोगों के पापों की अनदेखी करने के लिए तैयार था। लेकिन यह विचार मूसा की स्थिति का गलत आकलन होगा। मूसा का उद्देश्य लोगों के पाप को अनदेखा करना कदापि नहीं था। उसने यह नहीं कहा कि वे अपने पापों के लिए दण्ड पाए बिना बरी हो जाएँ। वरन, उसका उद्देश्य था कि वह परमेश्वर के प्रकोप को थाम कर रखे, जिन्हें उसने छुड़ाया था परमेश्वर को उन लोगों को पूर्णतया नाश करने से रोके रखे।

जब मूसा **छावनी के पास** पहुँचा, तो उसने लोगों के विधर्मी हो जाने को प्रत्यक्ष देखा। उसकी प्रतिक्रिया परमेश्वर की प्रतिक्रिया को प्रतिबिंबित करती थी (32:10); मूसा क्रोधित हुआ। उसने **उन तख्तियों** को जिन पर वाचा के नियम लिखे हुए थे **पटक** दिया। इसके परिणामस्वरूप वे तख्तियाँ **टूट** गईं, जो सूचक था कि वाचा टूट गई है।[17]

आयत 20. इसके पश्चात, मूसा ने **बछड़े को लेकर आग में डाल के फूँक दिया।** फिर उसने उसे **पीसकर चूर चूरकर डाला**, उसे **जल** में मिलाया और लोगों को **पिलवा दिया**। यह इस बात का चित्रण हो सकता है कि उनका पाप साझा था; जितनों ने जल में भाग लिया वे सभी मूर्तिपूजा के दोषी थे। कुछ व्याख्याकर्ताओं ने इसे गिनती 5:11-31 में कहे गए "जलन के जल" के साथ जोड़ा है। वहाँ व्यभिचार का अभियोग लगी महिला को तम्बू के फर्श की धूल मिला जल पीना होता था। यदि वह वास्तव में दोषी होती, तो उस जल के पीने से उसका दोष प्रकट हो जाता। उस रीति और इस्राएल को पिलाए गए जल में समानता इस तथ्य में है कि इस्राएल आत्मिक व्यभिचार का दोषी था क्योंकि उन्होंने सोने के बछड़े की उपासना की थी।[18]

आयत 21. मूसा ने लोगों के बलवे के लिए **हारून** का भी सामना किया। इससे पूर्व लोगों को बछड़ा बनाने का दोषी माना गया था; इस आयत में मूसा ने लोगों को इतने बड़े **पाप में फँसाने** के लिए हारून को दोषी ठहराया। प्रकट है कि इस प्रकरण में जितने सम्मिलित थे वे सभी दोषी थे। हारून को लोगों के अनुरोध को ठुकराने के द्वारा परमेश्वर के पक्ष में दृढ़ खड़े रहना चाहिए था। गलत करने के उनके दृढ़ निश्चय के सामने झुक जाने के स्थान पर, उसे उन्हें सही ओर लेकर जाना चाहिए था। आयत 25 कहती है कि हारून ने लोगों को "निरंकुश" हो जाने दिया था।

आयत 22. हारून ने प्रत्युत्तर में मूर्ति के अस्तित्व के लिए **लोगों को** दोषी ठहराया। उसने मूसा को स्मरण दिलाया कि इस्राएली **बुराई में मन लगाए रहते हैं**। उनके अविश्वासी होने की प्रवृत्ति पर विश्वास कर लेने के लिए, निश्चय ही मूसा ने उनके कुड़कुड़ाने और असंतोष व्यक्त करने को अनेकों बार अनुभव किया था।

आयतें 23, 24. बछड़े के बनाए जाने के विषय में हारून का विवरण वास्तविक था - एक सीमा तक। हारून ने इस वास्तविकता को माना कि उसने लोगों से उनका सोना लेकर **आग में डालने** के द्वारा उनके साथ सहयोग किया था, परन्तु फिर उसने यह दावा किया कि वह बछड़ा किसी अनजानी प्रक्रिया द्वारा बाहर निकल कर आ गया था। यह दावा कि वह बछड़ा स्वतः ही आग से पूर्णतः

बनाकर बाहर आ गया इतना असंगत है कि हास्यास्पद है।

हारून के स्पष्टीकरण के प्रति न तो मूसा और न ही परमेश्वर की प्रतिक्रिया को निर्गमन में दर्ज किया गया है। लेकिन व्यवस्थाविवरण 9:20 बताता है कि परमेश्वर हारून के प्रति इतना क्रोधित था कि यदि मूसा की मध्यस्थता न होती तो उसे मार ही डालता। इसलिए इसके बाद होने वाले मूर्तिपूजकों के संहार में हारून का जीवन छोड़ दिया गया।

लेवियों द्वारा तीन हजार का संहार (32:25-29)

25हारून ने उन लोगों को ऐसा निरंकुश कर दिया था कि वे अपने विरोधियों के बीच उपहास के योग्य हो गए। 26उनको निरंकुश देखकर मूसा ने छावनी के निकास पर खड़े होकर कहा, "जो कोई यहोवा की ओर का है वह मेरे पास आए;" तब सारे लेवीय उस के पास इकट्ठे हुए। 27उसने उनसे कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि अपनी अपनी जाँघ पर तलवार लटकाकर छावनी के एक निकास से दूसरे निकास तक घूम घूमकर अपने अपने भाइयों, संगियों, और पड़ोसियों को घात करो।" 28मूसा के इस वचन के अनुसार लेवियों ने किया; और उस दिन तीन हज़ार के लगभग लोग मारे गए। 29फिर मूसा ने कहा, "आज के दिन यहोवा के लिये अपना याजकपद का संस्कार करो, वरन् अपने अपने बेटों और भाइयों के भी विरुद्ध होकर ऐसा करो जिस से वह आज तुम को आशीष दे।"

लोगों के पाप के लिए दण्ड का आरंभ हो चुका था। उन्होंने तख्तियों के तोड़े जाने को देखा था, और उन्होंने उनकी मूर्तिपूजा की वस्तु द्वारा कड़वे किए गए जल को पीया था। अब दण्ड और भयानक हो गया था; अब उन्होंने प्रत्यक्ष सीखा कि "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है" (रोमियों 6:23) और मूर्तिपूजा मृत्युदण्ड के योग्य अपराध है।

आयत 25. अपनी अनुपस्थिति में प्रत्यक्षतः मूसा ने **हारून** और हूर को छावनी का अधिकारी ठहराया था (24:14)। यह तथ्य कि हारून नेतृत्व प्रदान करने के उत्तरदायित्व को निभाने में असफल रहा था पहले ही लिखा जा चुका है (32:21-24)। अब हारून की यह असफलता **उन लोगों को ऐसा निरंकुश कर दिया था** वाक्य के द्वारा प्रमुख की गई है। अपने नाच-रंग के कारण, इस्राएली **अपने विरोधियों के बीच उपहास के योग्य हो गए** (देखें 32:12; व्यव. 28:37)। दुर्लभ शब्द "उपहास" (שִׁמְצָה, *शिमत्साह)* में द्वेषपूर्ण कानाफूसी का विचार आता है।

आयत 26. मूसा ने समस्त इस्राएल को यहोवा के लिए खड़े होने का अवसर दिया: "**जो कोई यहोवा की ओर का है वह मेरे पास आए!**" केवल लेवियों ने प्रतिक्रिया दी।

आयतें 27, 28. ऐसा कोई संकेत नहीं है कि लेवियों ने समझ लिया था कि उन्हें क्या करने को कहा जाएगा; परन्तु जब उनसे कहा गया, तो वे आज्ञाकारी रहे। वे सारी छावनी में गए और **तलवार** द्वारा औरों को मारा, जिन्हें वे मार रहे

थे उनके साथ पृथ्वी के अपने निकट संबंधों का ध्यान किए बिना - चाहे **भाइयों**, **संगियों**, और **पड़ोसियों**, सब को घात किया। **तीन हज़ार के लगभग लोग** मारे गए। यद्यपि यह संभव है कि सुनहरे बछड़े की उपासना में केवल यही लोग सम्मिलित थे, लेकिन यह अधिक संभव है कि उस विधर्म के ये अगुवे थे।

आयत 29. जब दण्ड दिया जा चुका, तब मूसा ने लेवियों को आज्ञा दी कि वे **यहोवा के लिए अपना याजकपद का संस्कार** करें। यहोवा के पक्ष में होने के उनके निर्णय के कारण लेवी समर्पण के योग्य ठहरे। इस चुनाव के कारण, वे याजकीय गोत्र बन गए और परमेश्वर द्वारा विशेष आशीषित हुए।

क्षमा और दण्ड (32:30-35)

30दूसरे दिन मूसा ने लोगों से कहा, "तुम ने बड़ा ही पाप किया है। अब मैं यहोवा के पास चढ़ जाऊँगा; सम्भव है कि मैं तुम्हारे पाप का प्रायश्चित्त कर सकूँ।" 31तब मूसा यहोवा के पास जाकर कहने लगा, "हाय, हाय, उन लोगों ने सोने का देवता बनवाकर बड़ा ही पाप किया है। 32तौभी अब तू उनका पाप क्षमा कर - नहीं तो अपनी लिखी हुई पुस्तक में से मेरे नाम को काट दे।" 33यहोवा ने मूसा से कहा, "जिसने मेरे विरुद्ध पाप किया है उसी का नाम मैं अपनी पुस्तक में से काट दूँगा। 34अब तू जाकर उन लोगों को उस स्थान में ले चल जिसकी चर्चा मैं ने तुझ से की थी; देख, मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा। परन्तु जिस दिन मैं दण्ड देने लगूँगा उस दिन उनको इस पाप का भी दण्ड दूँगा।" 35अतः यहोवा ने उन लोगों पर विपत्ति डाली, क्योंकि हारून के बनाए हुए बछड़े को उन्हीं ने बनवाया था।

आयत 30. लोगों का नाश करने के विषय परमेश्वर अपना निर्णय पहले ही बदल चुका था (32:10, 14)। लेकिन फिर भी लोगों के **बड़े पाप** के लिए प्रायश्चित की आवश्यकता थी; उन्हें अभी भी क्षमा पाना आवश्यक था। **मूसा** ने लोगों को उनके पाप के लिए डांटा, लेकिन साथ ही उनके लिए **प्रायश्चित्त कर** के आने के लिए सेवा भी अर्पित की। ऐसा करने के लिए पर्वत पर **यहोवा के** सम्मुख खड़े होने के लिए उसे एक और यात्रा करनी थी।

आयत 31. यहोवा से मूसा की विनती संक्षिप्त थी। परमेश्वर के सम्मुख बहाने बनाने के स्थान पर, उसने नम्रता के साथ इस्राएल की विफलता का अंगीकार किया। उसने विस्मयादिबोधक शब्द **हाय, हाय** के साथ आरंभ किया, जो एक भावनापूर्ण आग्रह को दिखाता है; लोगों ने जो किया था वे उसके लिए खेदित थे। फिर मूसा ने कहा कि लोगों ने **बड़ा ही पाप किया है**। इब्रानी की सबल अभिव्यक्ति חַטָּאתָם חַטָּאָה גְדֹלָה *(चटाथेम चाटाह गेदोलह)* का वस्तुतः अनुवाद "बड़ा पाप किया है" (KJV) हो सकता है। इस अध्याय में यह तीसरी बार है कि वाक्याँश "बड़ा पाप" आया है (32:21, 30, 31)। मूर्तिपूजा का दुःखद पाप का विशेषतः नाम लिया गया है: **उन लोगों ने सोने का देवता बनवाकर।**

आयत 32. मूसा ने फिर परमेश्वर से निवेदन किया कि **उनका पाप क्षमा कर**। पुराने नियम के समय में परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोगों का उससे ऐसा संबंध होता

था जिसमें क्षमा माँगने का अवसर होता था। क्षमा की ये प्रार्थनाएं किसी विशिष्ट बलिदानों के साथ जुड़ी हुई नहीं होती थीं, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण स्वभाव और प्रार्थना करने वाले के साथ उसके संबंध के आधार पर क्षमा प्रदान की जा सकती था।

शैली रोचक है: मूसा ने वाक्य का आरंभ तो किया परन्तु उसे समाप्त कभी नहीं किया। वरन, उसने अपने आप को अवरुद्ध किया - जैसा कि डैश चिन्ह से संकेत मिलता है - एक वैकल्पिक अनुरोध करने के लिए। यह अलंकारिक शैली, जिसे "अध्र्दोक्ति" कहते हैं, सामान्यतः प्रबल भावना का संकेत करती है। इसकी परिभाषा है "किसी विचार के पूर्ण होने से पहले उसे अचानक बाधित कर देना।"[19] मूसा कह रहा था, "यदि तू उन्हें क्षमा करेगा तो कृपया ऐसा कर दे; यदि नहीं, तो **अपनी लिखी हुई पुस्तक में से मेरे नाम को काट दे**।" अपने संगी इस्राएलियों के लिए मूसा की भावनाओं की गहराई इस निवेदन से प्रकट होती है। उसकी इस अनुकंपा में पौलुस की अनुकंपा की प्रतीक्षा थी (रोमियों 9:3) और यीशु की भी, जो हमारे लिए पाप बन गया (2 कुरि. 5:21)।

मूसा का कथन बाइबल में ऐसी पुस्तक का प्रथम उल्लेख है जिसमें संभाव्यता उनके नाम दर्ज हैं जो परमेश्वर को पसन्द हैं (देखें भजन 69:28; यशा. 4:3; यहेज. 13:9; दानिय्येल 12:1; मलाकी 3:16; लूका 10:20; फिलि. 4:3; इब्रा. 12:23; प्रका. 3:5; 13:8; 17:8; 20:12, 15; 21:27)। संभवतः यह चित्रण प्राचीन नगरों में अपने नागरिकों के नाम की पंजिका को रखने की पद्धति से लिया गया है। यदि कोई व्यक्ति अपने नागरिक होने के अधिकार को खो देता था या उसका देहांत हो जाता था, उसका नाम पंजिका से हटा दिया जाता था।

आयत 33. मूसा के निवेदन के प्रति यहोवा का प्रत्युत्तर था, "**जिसने मेरे विरुद्ध पाप किया है उसी का नाम मैं अपनी पुस्तक में से काट दूँगा।**" इन शब्दों में एक सामान्य सिद्धान्त है जो सभी समयों में सत्य रहा है: लोग अपने ही पापों के लिए उत्तरदायी होते हैं। यहेजकेल ने कहा, "जो प्राणी पाप करे वही मरेगा ... दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा" (यहेज. 18:20)।

पुराने नियम में विशेषतया सामूहिक दोष का अभिप्राय है - एक व्यक्ति का दोष एक प्रकार से सारी देह को दोषी कर देता है। इसके अतिरिक्त, आशीष की प्रतिज्ञाएँ और श्राप की धमकी जो वाचा और व्यवस्था के साथ जुड़ी हैं वे सारे राष्ट्र के लिए सामूहिक तौर पर हैं, राष्ट्र के अन्दर विशेष व्यक्तियों के लिए नहीं। फिर भी, केवल वे ही जो वास्तविकता में पाप के दोषी हैं परमेश्वर द्वारा अपने पापों के लिए उत्तरदायी माने जाते हैं।

आयत 34. लेख यह प्रकट नहीं करता है कि जिन्होंने उस अवसर में पाप किया था उन्हें यहोवा ने क्षमा किया या नहीं, या किस सीमा तक किया। परमेश्वर द्वारा इस्राएलियों को नाश न करने के निर्णय से क्षमा प्रकट है। किन्तु परमेश्वर की इच्छा अपने लोगों को दण्ड देने की थी। **जिस दिन मैं दण्ड देने लगूँगा** का अर्थ वह दिन हो सकता है जिस दिन मूसा ने लोगों की ओर से परमेश्वर से आग्रह किया। यदि ऐसा है तो, परमेश्वर उन्हें **पाप** के लिए **दण्ड देने** की अपनी इच्छा की घोषणा कर

रहा था। इसके विपरीत, यह अभिव्यक्ति भविष्य के लिए भी हो सकती है। ऐसी स्थिति में, परमेश्वर लोगों से कह रहा था कि वह लोगों के साथ तो रहेगा परन्तु जब भी उन्हें दण्ड की आवश्यकता होगी वह उन्हें दण्ड दे देगा।

परमेश्वर के कथन के साथ कि वह लोगों को दण्ड देगा, उसने मूसा को दिए गए आदेश को दोहराया **"लोगों को उस स्थान में ले चल जिसकी चर्चा मैं ने तुझ से की थी।"** यह ऐसा था मानो परमेश्वर कह रहा हो, "इसकी चिंता मत कर कि मैं लोगों के साथ क्या करूँगा। जो मैंने तुझे करने को कहा है उसे कर।" फिर इसमें परमेश्वर ने जोड़ा, **"मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा।"** यह कहने के द्वारा कि उसका दूत इस्राएल के आगे चलेगा, परमेश्वर ने लोगों को आश्वस्त किया कि उनकी असफलताओं के होते हुए भी, वह उन्हें वाचा के देश में लेकर आएगा। इस दूत के बारे चर्चा पहले ही हो चुकी है (23:20, 21 पर टिप्पणियों को देखिए)। कभी-कभी दूत परमेश्वर की उपस्थिति के तुल्य प्रतीत होता है, परन्तु इस संदर्भ में लोगों के साथ दूत का जाना, लोगों के मध्य में परमेश्वर के रहने की अनिच्छा (33:2, 3) के साथ तुलनात्मक है। इसलिए इस खण्ड में "दूत" संभवतः स्वयं परमेश्वर नहीं है।

आयत 35. इस अध्याय का अन्त यह कहने से होता है **कि यहोवा ने उन लोगों पर विपत्ति डाली।** प्रत्यक्षतः, यह कार्य उनके पाप के लिए तीसरा दण्ड था। उन्होंने मूर्ति से दूषित किया गया पानी पीया था, और विद्रोह के तीन हज़ार अगुवे मार डाले गए थे। अब परमेश्वर ने "लोगों पर विपत्ति डाली" और उनकी ताड़ना की (KJV; NKJV; NIV; ESV; NRSV)। इस दण्ड का कोई और विवरण नहीं दिया गया है। उम्बेरटो कस्सूटो ने लिखा कि यह आवश्यक नहीं है कि वह विपत्ति सुनहरे बछड़े वाले पाप के तुरंत बाद आई हो। उन्होंने आगे समझाया,

> अर्थ यह है कि यहोवा ने लोगों पर विपत्ति डाली, सामूहिक दण्ड के रूप में, किसी अपरिभाषित समय पर, जिस दिन वह आया उसी दिन। बाइबल निश्चित नहीं कहती है कैसे और कब दण्ड को लागू किया गया, परन्तु इस के बारे में पिछली आयत के विषय को समाप्त करने के लिए उल्लेख करती है, और हमें यह जानकारी देने के लिए कि जैसा पहले इसकी घोषणा की गई थी, वैसा ही यह हुआ भी।[20]

निर्गमन 32 परमेश्वर के प्रकोप और उसके दण्ड, या ताड़ना के मध्य अन्तर को चित्रित करता है। जब लोगों ने पाप किया तो परमेश्वर ने उन्हें नाश कर डालने की धमकी दी। यदि वह ऐसा कर देता, तो उसके द्वारा उसके लोगों का नाश उसके प्रकोप का एक उदाहरण ठहरता। उसके लिए उचित होता कि वह अत्यधिक गंभीर कदम उठाए और उन लोगों का नाश करे जिन्होंने उसकी वाचा की अवहेलना की थी और उसकी आज्ञाओं की अनाज्ञाकारिता की थी। किन्तु, अपने लोगों के विरुद्ध अपने प्रकोप को कार्यान्वित करने से उसे रोका गया। लोगों को फिर भी दण्ड या ताड़ना मिलनी थी, जिससे कि वे परमेश्वर के विरुद्ध किए गए उनके पाप की गंभीरता को समझ सकें। इसलिए उसने उन्हें दण्ड तो दिया परन्तु पूर्णतः नाश नहीं किया।

अनुप्रयोग

वाचा का तोड़ा जाना (अध्याय 32)

निर्गमन 19 हमें *वाचा के स्थापित किए जाने* के बारे में बताता है। निर्गमन 20-23 में हम उन भले नियमों को पाते हैं जो इस वाचा के भाग थे। निर्गमन 24 वाचा की पुष्टि करने के अनुष्ठान का वर्णन करता है। फिर मूसा चालीस दिन के लिए सीनै पर्वत पर व्यवस्था प्राप्त करने के लिए गया (24:18)। इस्राएल के लिए सब कुछ ठीक था। इसके बाद, निर्गमन 32 में हम *वाचा के तोड़े जाने* के विषय में पढ़ते हैं।

आज कलीसिया का परमेश्वर के साथ लगभग वैसा ही संबंध है जैसा तब इस्राएल का था। तब वे उसकी वाचा के लोग थे, और आज हम उसकी वाचा के लोग हैं। जैसे कि उन्होंने वाचा को तोड़ा था,आज हम भी वाचा को तोड़ सकते हैं। इसलिए, हम इस्राएल की गलतियों से सीख सकते हैं।

उनका पाप क्या था? मूर्तिपूजा - यहोवा परमेश्वर के स्थान पर अन्य ईश्वर को प्रति स्थापित कर देना! हमारे आज के, यदि सभी नहीं तो अधिकांश, पापों में मूर्तिपूजा मूलभूत है: हम किसी व्यक्ति या वस्तु को परमेश्वर से पहले का स्थान दे देते हैं। यह मूर्तिपूजा है।

इस्राएल के पापों के कारण क्या थे? (1) *अधीरता* (32:1)। इस्राएलियों ने मिस्र में चार सौ वर्ष बिताए थे, परन्तु व्यवस्था के लिए वे चालीस दिन भी प्रतीक्षा नहीं कर सके! (2) *एक ऐसे ईश्वर की लालसा जिसे वे देख सकें* (32:4)। परमेश्वर आत्मा है (यूहन्ना 4:24) और मानवीय आँखों से उसे देखा नहीं जा सकता है। हमें विश्वास से चलना है दृष्टि से नहीं; परन्तु मूसा के समय से लेकर आज तक, लोगों ने विदित ईश्वर की लालसा रखी है या कम से कम किसी ऐसे भौतिक प्रमाण की, कि परमेश्वर जीवित है और भला-चंगा है। (3) *परमेश्वर ने जो उनके लिए किया उसकी सराहना नहीं करना* (32:9)। इस्राएली हठीले थे और परमेश्वर ने जो उनके लिए किया था उसे भूल जाने की प्रवृत्ति रखते थे; उनका भूल जाना और कृतघ्न होना उन्हें पाप में ले गया। (4) *वासना* (32:6, 19)। वासनापूर्ण कृत्य, जो लगभग निश्चय ही इस अवसर का भाग रहे होंगे, परमेश्वर के विषय गलत धारणा के साथ होते हैं (32:23, 24; देखें रोमियों 1:22-25)। सच्चे परमेश्वर का तिरस्कार करना लोगों को और भी अधिक पापी होने का निमंत्रण देना है। (5) *घटिया नेतृत्व* (32:25)। उनके पाप के लिए हारून कुछ सीमा तक उत्तरदायी था।

उनके पाप के तत्काल परिणाम क्या थे? (1) परमेश्वर की आरंभिक प्रतिक्रिया उन्हें नाश कर देने की थी (32:9, 10)। (2) मूसा की आरंभिक प्रतिक्रिया एक अच्छे अगुवे की थी; वह उनके पक्ष में मध्यस्थ बना और दिखाया कि वह अपने आप से अधिक उनकी चिंता करता था (32:11-13)। (3) परमेश्वर की दूसरी प्रतिक्रिया आयत 14 में मिलती है: "तब यहोवा ... हानि करने से ... पछताया" (KJV)। इस अभिव्यक्ति का क्या अभिप्राय है? परमेश्वर ने अपनी मनसा बदली। उसने उनके गलत कार्य के प्रति अपनी मनसा नहीं बदली, न ही उसने उन्हें कोई

दण्ड न देने का निर्णय लिया। वरन, उसने अपनी मनसा बदली और उन्हें पूर्णतया त्याग नहीं दिया, यद्यपि उसके पास ऐसा करने का अधिकार था। (4) मूसा की दूसरी प्रतिक्रिया थी "साक्षी की दोनों तख्तियों" को तोड़ देना। वह क्रोधित हुआ। उसने बछड़े को जलाया, उसकी राख को जल पर फेंका, और लोगों को उसे पिलाया (32:15-20)। (5) हारून की प्रतिक्रिया थी बछड़े के बनाए जाने के लिए लोगों को तथा एक आश्चर्यकर्म को, जिसके द्वारा बछड़ा स्वतः ही बन गया, दोषी ठहराना (32:21-24)। (6) लेवियों की प्रतिक्रिया थी मूसा के साथ खड़े होना और फिर सारी छावनी में जाना, और विद्रोह करने वाले सभी अगुवों को मार डालना (32:26-28)। (7) मूसा की तीसरी प्रतिक्रिया थी लेवियों को आशीष देना, इस्राएलियों के पापों का अंगीकार करना, और परमेश्वर से लोगों को क्षमा कर देने के लिए कहना (32:29-32)। (8) परमेश्वर की तीसरी प्रतिक्रिया थी यह घोषणा करना कि वह केवल उन्हीं को दण्ड देगा जो दोषी हैं। इसके बाद उसने लोगों पर एक विपत्ति भेजी (32:33-35)।

हमें इस घटना से क्या सीखना चाहिए? (1) पाप - या वाचा का तोड़ा जाना - कोई हलकी बात नहीं है! सामान्यतः पाप के ऐसे प्रभाव होते हैं जो उस पल के बाद भी बने रहते हैं। इस्राएल के इतिहास में, बाद में, येरोबाम के बछड़ों ने उत्तरी राज्य को नाश कर दिया। (2) पाप केवल हमें ही नहीं, औरों को भी प्रभावित करता है। ऐसा कौन सा पाप है जो इतना व्यक्तिगत है कि वह किसी प्रकार से भी दूसरों को नकारात्मक रूप में प्रभावित नहीं करेगा? (3) परमेश्वर स्वयं पाप को देखता और दण्डित करता है (32:33)। परमेश्वर हमें हमारे पापों के लिए उत्तरदायी ठहराता है, न कि दूसरों के पापों के लिए; और हमारे पापों के लिए वह दूसरों को दोषी नहीं ठहराता है। (4) पाप के परिणाम भयानक होते हैं - यहाँ तक कि मृत्यु भी।

उनके पाप का परिणाम क्या था? इसके बाद आने वाले दोनों अध्याय परमेश्वर के साथ इस्राएल के पूर्व संबंधों की पुनःस्थापना पर बल देते हैं। हम भूमि को लेकर प्रतिज्ञा के नवीनीकरण की बात के विषय पढ़ते हैं (33:1), परमेश्वर की उपस्थिति की प्रतिज्ञा के नवीनीकरण (33:14-16) के विषय, और वाचा के नवीनीकरण के विषय (34:1, 6; देखें 34:7, 9, 10)। चाहे इस्राएल गिर गया, परमेश्वर ने इस्राएल को त्याग नहीं दिया। उसने अपने लोगों के लौटने का स्वागत किया। यह पापियों के लिए अच्छा समाचार है। हम गिर जाने के विषय में पढ़ते हैं, परन्तु हम कभी भी इतनी दूर तक नहीं गिर सकते हैं कि यदि हमारी लौट के आने की इच्छा हो (1 यूहन्ना 1:9) तो हम लौट के आ न सकें।

आज के लिए जो सन्देश है वह यह है: अन्य देवता सदा ही हमें प्रलोभन देते हैं। संसार हमें आमंत्रित करता, लालच देता, विनती करता, और आग्रह करता है, कि हम अन्य देवताओं की सेवा करें। लेकिन, यदि हम यहोवा के साथ अपनी वाचा को तोड़ देते हैं, तो हम दण्ड की आशा रख सकते हैं और हमें रखनी भी चाहिए। पाप के दाम चुकाने के लिए सदा ही एक कीमत होती है, परन्तु सदा लौट के आने का मार्ग भी होता है। परमेश्वर उड़ाऊ को क्षमा कर सकता है। हाँ, परमेश्वर हमें

क्षमा कर सकता है और क्षमा कर भी देगा, चाहे हमने इस्राएलियों के समान वैसा पाप किया हो जैसा उन्होंने वाचा को तोड़ने के द्वारा किया था।

हमारी निधि के तीन उपयोग (32:2-4; 33:4-6; 35:22)

निर्गमन में तीन बार लोगों के आभूषणों का उल्लेख है। उन्होंने सुनहरा बछड़ा बनाने के लिए अपने कानों के कुंडल दिए; उन्होंने अपना पश्चाताप दिखाने के लिए अपने आभूषण उतार दिए; और मिलापवाले तम्बू बनाने के लिए उन्होंने स्वेच्छा से अपने सोने के आभूषण दे दिए। उनके आभूषणों के ये तीन उपयोग हमें हमारे "सोने" - सामान्य रीति से हमारी "निधि," हमारी भौतिक संपदा, का उपयोग करने की तीन विधियों का सुझाव देते हैं। प्रथम, हमें अपनी भौतिक संपदा का उपयोग बुराई को बढ़ावा देने के लिए नहीं करना चाहिए, जैसा कि उन्होंने किया था जब उन्होंने सुनहरे बछड़े को बनाने के लिए दिया (32:2-4)। दूसरा, हमारे पास जो है उसे हम अपने पश्चाताप को दिखाने के लिए प्रयोग कर सकते हैं, जैसा कि इस्राएलियों ने किया जब उन्होंने अपने आभूषण उतारे, या, अन्य अवसरों पर अपने कपड़े फाड़े। उदाहरण के लिए हम ऐसा बुराई से अर्जित किए गए लाभ को छोड़ देने के द्वारा, जो हमने चुराया है उसे वापस करने के द्वारा, और अन्य ऐसे कार्यों के द्वारा कर सकते हैं (33:4-6)। तीसरा, हम अपनी निधि में से परमेश्वर के राज्य की बढ़ोतरी के लिए दे सकते हैं, जैसा उन्होंने मिलापवाले तम्बू के बनाने के लिए दिया (35:22)।

मूसा, एक आदर्श चरवाहा (32:7-35)

मूसा को परमेश्वर ने चुना था इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाने और उन्हें वाचा के देश में लाने के लिए। परमेश्वर ने मूसा को इसके लिए ईश्वरकृत रीति से चालीस वर्ष तक चरवाहे का कार्य करने के द्वारा तैयार किया। सुनहरे बछड़े की घटना में, मूसा ने चरवाहे के प्राथमिक गुण को दिखाया: भेड़ों की चिंता करना। मूसा भेड़ों के लिए इतना चिन्तित था कि जब परमेश्वर ने कहा कि वह उन्हें नाश करके मूसा से एक बड़ी जाति बनाएगा (32:7-14), तब मूसा ने परमेश्वर के सम्मुख उनके लिए मध्यस्थता की। मूसा भेड़ों और उनकी आत्मिक भलाई के लिए इतना चिन्तित था कि उनके पाप के कारण वह क्रोधित हुआ और उसने यह निश्चित किया कि जो उन्हें पाप में ले गए थे उन्हें डाँट और दण्ड मिले (32:15-29)। मूसा का क्रोध और उसके द्वारा दिया गया दण्ड लोगों के लिए उसके प्रेम का भी प्रमाण था। मूसा को भेड़ों की इतनी चिंता थी कि उसने भेड़ों के लिए प्रायश्चित करने का प्रयास किया, यहाँ तक कि उनके स्थान पर वह उनके दोष के दण्ड को भुगतने को तैयार था (32:30-35; देखें रोमियों 9:1-3; 2 कुरि. 5:21)। आज चरवाहों (अगुवों) को मूसा से सीखने की आवश्यकता है कि उनका प्राथमिक कार्य भेड़ों (कलीसिया) की, जिसकी वे अगुवाई करते हैं चिंता करना है (देखें यूहन्ना 10:1-18)।

कठिन विकल्प (32:10)

क्या मूसा के लिए इस प्रस्ताव को ठुकराना कठिन था कि वह अब्राहम के समान लोगों की एक श्रृंखला का, जो परमेश्वर के लोग होंगे, आदि पुरुष बने? लेकिन फिर भी, उसने ठुकराया। क्यों? वह उन लोगों की चिंता करता था, जिनकी वह अगुवाई कर रहा था, और वह परमेश्वर की बातों का ध्यान रखता था। वह चाहता था कि जो कार्य परमेश्वर ने आरंभ किया है, उसमें वह सफल हो। जब हमारे सामने चुनाव करने के लिए कठिन विकल्प होते हैं, तो दूसरों तथा परमेश्वर के लिए चिन्ता हमें सही निर्णय करने में सहायक होगी।

क्या मनुष्य परमेश्वर से उसकी मनसा बदलवा सकता है? (32:14)

मूसा के तर्क सुनने के बाद "यहोवा ... करने से जो उसने कहा था पछताया।" यद्यपि समझने के लिए यह कठिन धारणा है, यह खण्ड हमें आशा दिलाता है कि जब हम निष्ठा के साथ यहोवा से आग्रह करते हैं, तो "वह पछता सकता है" (उसी अभिप्राय में जैसा उसने निर्गमन 32 में किया) और हमारे निवेदन स्वीकार कर सकता है। "परमेश्वर की मनसा को बदलने" की एक अन्य विधि है पश्चाताप करना, जैसा नीनवे के लोगों ने किया (योना 3:10)।

बेतुके बहाने - हारून का चमत्कारी बछड़ा (32:21-24)

जब मूसा ने हारून को बछड़ा बनाने के लिए डाँटा, तो हारून ने मूसा को किसी के भी द्वारा पहले कभी न सुनी गई बेतुकी कहानी सुनाई: उसने सोने को आग में फेंका और बछड़ा चल कर बाहर आ गया। क्या हम भी अपने पापों के लिए बहाने बनाते हैं? क्या हमारे भी कुछ बहाने हारून के बहाने के समान बेतुके होते हैं? हो सकता है कि वे हमें यथोचित लगें परन्तु परमेश्वर को बेतुके लगते हैं।

"एक बड़ा पाप" (32:21, 30, 31)

मूसा ने इस्राएल द्वारा सुनहरे बछड़े की उपासना को तीन बार "एक बड़ा पाप" कहा। वॉरेन डब्ल्यू. रिस्बी ने लिखा,

> जिन्होंने वह किया था उनके कारण वह बड़ा पाप था: इस्राएल का राष्ट्र, परमेश्वर के चुने हुए लोग... । जब और जहाँ वह किया गया उसके कारण वह बड़ा था: सीनै पर्वत पर उनके द्वारा परमेश्वर के नियमों की घोषणा को सुने जाने और परमेश्वर की महिमा के प्रकट होने के बाद... । वह बड़ा पाप था क्योंकि वे पहले ही परमेश्वर के उस सामर्थ्य और दया का अनुभव कर चुके थे: मिस्र के विरुद्ध न्याय, लाल समुद्र पर बचाया जाना, भोजन और जल का प्रावधान, और बादल और आग के खम्भे के द्वारा परमेश्वर का अनुग्रहपूर्ण अगुवाई।[21]

अनुग्रह द्वारा बचाए गए परमेश्वर के लोग होने के कारण, आज मसीहियों को "बड़े" पाप करने से बचे रहने की सावधानी रखनी चाहिए।

"यहोवा की ओर कौन है?" (32:26; KJV)

मूर्तिपूजा के लिए परमेश्वर के दण्ड को देने की तैयारी करते समय, उसने पूछा, "जो कोई यहोवा की ओर का है वह मेरे पास आए" (32:26; KJV)। इसके लिए NASB में आया है "जो कोई यहोवा की ओर है वह मेरे पास आए!" लेवियों ने प्रतिक्रिया दी, यहोवा की इच्छा को किया, और परिणामस्वरूप आशीषित हुए। आज भी मानवजाति के सामने यही प्रश्न है: "यहोवा की ओर कौन है?" हम में से प्रत्येक को यह निर्णय चाहिए कि हम यहोवा की ओर होंगे कि नहीं, क्या हम उसकी ओर होंगे या उसके विरुद्ध।

समाप्ति नोट्स

[1]निर्गमन 32:1 पर नोट, ब्रूस एम. मेत्सगर और रोलैंड ई. मर्फी, सम्पादक, *द न्यू आक्सफोर्ड एन्नोटेड बाइबल विद दि अफोक्रिफा* (न्यू यॉर्कः आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, 1991), 112. [2]जॉन जे. डेविस, *मोजेज एण्ड द गॉड्स आफ इजिप्टः स्टडीज इन एक्सोडस,* दूसरा संस्करण (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाऊस, 1986), 292-93. [3]आर. के. हैरिसन, "ईयरिंग," इन *द इंटरनैशनल बाइबल एनसाईक्लोपीडिया*, रिव. एड., एड. ज्यौफ्री डब्ल्यू. ब्रोमईली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1982), 2:3. [4]देखें सी. एफ. कील और एफ. डेलित्ज, *द पेंटाट्यूक,* खण्ड 2, अनुवादक जेम्स मार्टिन, बिब्लिकल कमेंट्री आन द ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, n.d.), 222. [5]जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमेंट्री आन एक्सोडस, द सेकेंड बुक आफ मोजेज* (अबिलीन, टेक्सासः एसीयू प्रेस, 1985), 441. [6]आर. ऐलेन कोल, *एक्सोडसः एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमेंट्री,* टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डॉनर्स ग्रूव, इल्ल.: इन्टर-वार्सिटी प्रेस, 1973), 214. [7]देखें अपीस ईश्वर का प्रतिनिधि करने वाला मिस्र की बछड़े की मूर्ति, अलफ्रेड जे. होएर्थ, *आर्ख्येओलोजी एण्ड दी ओल्ड टेस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाऊस, 1998), 175. [8]नहूम एम. सारना, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडसः दि ओरिजीन्स आफ बिब्लिकल इस्राएल* (न्यू यॉर्कः शोकेन बुक्स, 1996), 218. [9]उपरोक्त, 217. [10]डब्ल्यू. एच. गिस्पेन, *एक्सोडस,* ट्रांस. एड वैन डेर मास, बाइबल स्टुडेंट्स कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रीजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, जौंडर्वैन पबलिशिंग हाउस, 1982), 293. होएरथ, 221 में उस खम्बे को देखें जिस पर आँधी-तूफ़ान के देवता हदाद को बैल की पीठ पर खड़े दिखाया गया है।

[11]जून एच. वॉल्टन एण्ड विक्टर एच. मैथ्यूस, *जेनेसिस-ड्यूट्रौनमी,* द आईवीपी बाइबल बैक्ग्राउन्ड्स कॉमेन्ट्री (डाउनर्स ग्रोव, इल्ल.: वर्सिटी इंटर प्रैस, 1997), 135. [12]रॉनल्ड एफ. यंगबल्ड, *एक्सोडस,* एवरीमैंस बाइबल कॉमेन्ट्री (शिकागो: मूडी बाइबल इंस्टीट्यूट, 1983), 135. [13]जेम्स के. हौफ्मेइयर, "स्टिफ-नेक्ड; स्टिफन द नेक," इन *द इंटरनैशनल बाइबल एनसाईक्लोपीडिया*, रिव. एड., एड. ज्यौफ्री डब्ल्यू. ब्रोमईली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1988), 4:619. [14]कॉफमैन, 443-44. [15]वॉल्टर सी. कैसर, जूनियर, "एक्सोडस," इन *द एक्स्पोजिटर्स बाइबल कॉमेन्ट्री*, वोल. 2, *जेनिसिस-नम्बर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडर्वैन, 1990), 479. [16]जॉन आई. डरहम, *एक्सोडस,* वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 3 (वैको, टेक्स.: वर्ड बुक्स, 1987), 430. [17]सारना, 219; कोल, 212. [18]सारना, 219-20. [19]एडवर्ड पी. मेयर्स, "इंटरप्रेटिंग फिगरेटिव लैंग्वेज," इन *बिब्लिकल इंटरप्रेटेशन - प्रिंसिप्लस एण्ड प्रैक्टिस*, एड. एफ. फुमैंन कीयरले, एडवर्ड पी. मेयर्स, एण्ड टिमथी डी. हैडले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाऊस, 1986), 97. [20]उम्बेरटो कस्सूटो, *ए कॉमेन्ट्री ऑन द बुक ऑफ एक्सोडस,* ट्रान्स. इस्राएल एब्राहम्स (जेरुसलेम: मैग्नेस प्रैस, 1997), 424.

[21]वॉरिन डब्ल्यू. रिस्बी, *बी डिलिवर्ड* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलो.: विक्टर, 1998), 165.